माँ कालि का स्वरूप महासिद्धपुरुष श्री अण्णन स्वामिजी

जीवनी

आदिकाल से ही हमारे भारतवर्ष में लोगों को आत्मज्ञान की अनुभूति कराने में ऋषि-मुनि,साधु-संत और सिद्धपुरुषों की अहम भूमिका है। आज भी हमारे देश के दूर दराज के छोटे छोटे गाँवो में इन जीवसमाधिस्थ सिद्धपुरुष, जनकल्याण कार्य में संलग्न है। माताजी का स्वरूप श्री अण्णन स्वामिजी इनमे से एक हैं। तमिल नाडु के इतनी छोटी ढाणी से उत्तर भारत स्थित मरुक्षेत्र राजस्थान में श्री अण्णन स्वामिजी का आगमन कैसे हुआ? यह एक चमत्कार से कम नहीं है।अपने समकालीन व आराधक विळमल (श्री अण्णन स्वामिजी मन्दिर) के श्री शिवप्रकाशमजी को हूबहू राजस्थान के गुलाबी संगमरमर के श्री अण्णन को बनाने का आदेश दिया। जिसका पालन हुआ – वह भी एक बहुत आश्चर्यजनक कार्य है जो विळमल में विराजमान है। आपकी उत्सुकता के जवाब के लिये प्रस्तुत है इस महासिद्धपुरुष की जीवनी -------

तमिल नाडु के चेन्नई शहर से २५० किलोमीटर दूरी में स्थित पुरातन पुण्य क्षेत्र तिरुवारूर से २० किलोमीटर दूरी में पुदूर चौराहा है। यह तिरुवारूर – तिरुत्तुरैपूण्डि स्थित हाइवे पर है। यहाँ से ३ कि.मी दूरी पर स्थित पुदूर गाँव में 13 जनवरी 1937 को श्रीमति कमलाम्बाळ और श्री चक्रपाणि ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसका नाम अरुणाचलम रखा गया।अरुणाचलम अपने प्राथमिक शिक्षा पुदूर गाँव में ही पुरी की और दसवी कक्षा तक तिरुत्तुरैपूण्डि का सरकारी बोर्ड स्कूल मे पढें। अचानक एक दिन जब स्कूल से वापस आ रहे थे एक व्यक्ति जो बँगाली महाराजजी थे उनसे मुलाकात हुई। अपने संग चलने को कहा। अरुणाचलम उनके साथ साथ चल दिये। जहाँ रुके वहाँ उनहोंने देखा "यह तो शमशान भूमि जो कि मुल्लै नदि के पास है"। उस समय अरुणाचलम की उम्र करीब पन्द्रह वर्ष थी। वहाँ पर ही उनको दीक्षा मिली।अरुणाचलम माता पिडारिजी की अर्चना की और कालांतर में माँ काली के महा उपासक बन गये।इक्कीस वर्ष की उम्र में उनको माँ काली के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह स्थान पुदुर गाँव के अपने ही चावल मील के एक छोटे कमरे (जिसका नाप १० बाइ ८ फीट है),जिसमे अरुणाचलम माँ काली की आराधना किया करते थे। माँ काली अपनी महापुरातन भूमिगत स्थान जो वटवृक्ष के नीचे था और उस कम्रे से पारदर्शी था उनको दर्शाया। माँ काली ने उनको उसी जगह मन्दिर बनाने का आदेश दिया जिसका नाम कालांतर में 'अतिमरत्ताच्चि' (वट्माता) के नाम से विख्यात हुआ।सत्रह साल की उम्र में ही अरुणाचलम भक्ति मार्ग में अग्रसर थे जिनके सान्निध्य पाने के लिये कई ज्ञानी और महासिद्धपुरुष आने लगे। जिनमें महत्वपूर्ण:

1. परम पूज्य आण्डाळपुरम राजगोपाल स्वामिजी महाराज (उम्र तब लगभग १०० साल)
2. प.पू. मरुदूर स्वामिजी जिनका उपनाम प.पू.शिव स्वामिजी (उम्र तब ७५ साल)
3. प.पू. कोम्बोट्टि स्वामिजी (उम्र तब ८० साल से ज्यादा)
4. प.पू. अतिप्पडुगै स्वामिजी (उम्र तब ८० साल से ज्यादा)
5. प.पू. तिरुच्चेन्दूर स्वामिजी (उम्र तब ७० साल से ज्यादा)
6. इस्लामी संत प.पू. अधिरामपट्टणम स्वामिजी (उम्र तब ७० साल से ज्यादा)

बाल अरुणाचलम के रिश्तेदार और मित्रगण "अण्णन" (तमिल में बडे भाई) से संबोधित करते थे। उसके बाद लोग उन्हें आदर पूर्वक "अय्या" (तमिल में महोदय) और दैविक शक्ति पाने के बाद "अण्णन स्वामि" पुकारने लगे। श्री अण्णन स्वामि के झुकाव निम्नलिखित कलाओं में था।1.मार्शियल आर्ट्स - भारोत्तलोन, लाठी चलाना और मुक्केबाजी 2.दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत, राग आधारित तमिल फिल्मी गाने और भक्ति संगीत में भी उनकी रुचि थी और हारमोनियम की संगत मे गाते थे।**तपस्या:** कई बार श्री अण्णन स्वामिजी बिना खाये पीये और बिना निद्रा के कई घंटें कई दिन कई महीनों तक तपस्या करते रहे। विशेष कर महासमाधि लेने से पूर्व वे कमरे में एक बडे अग्निपात्र के सामने कई महीनों तक खडे होकर कठिन तपस्या में लीन होते रहे।**श्री अण्णन स्वामिजी के चमत्कार**:पैंतीस साल की आयु से श्री अण्णन स्वामिजी

पूरी तरह तपस्या और साधना में लीन हो चुके थे और लगातार माँ काली के संपर्क में आ चुके थे और वार्तालाप करते रहते थे। अपनी दिव्य शक्ति को जन कल्याण के लिये उपयोग करते थे। उन्होंने कई लाइलाज बीमारियों का उपचार किये। प्राकृतिक आपदाओं की भविष्यवाणि की और इससे होनेवाली जनधन हानि को बचाया। कई शिक्षक, कलाकार, बुद्धिजीवि आदि को इनके सान्निध्य पाने के बाद नयी ऊँचाइयों को छूने का अवसर प्राप्त हुआ। जिज्ञासुओं को आगे बढने का रास्ता मिला। नास्तिक और आलोचक भी अपने व्यक्तिगत अनुभव से श्री अण्णन स्वामिजी के भक्त हो गये थे।युवाओं के लिये एक अच्छे मार्गदर्शक थे। रूपये पैसे की बचत, खाने पीने की वस्तुओं की बचत करने के लिये लोगों को प्रोत्साहित करते थे।जिन्होंने उनके प्रत्यक्ष दर्शन नहीं किये, वे भी उनकी तस्वीर याँ मूर्ति के सामने ध्यान करने से उनके भी समस्त दुखों का निवारण होता है। संपूर्ण विश्व को बिना भेदभाव के – धर्म, जाति, भाषा और सामाजिक स्तर को समदृष्टि से देखना उनका स्वभाव था। स्त्रियों को शक्ति का स्वरूप समझे। अंध विश्वास और रीति रिवाज को नापसंद करते थे और धर्म और आस्था के सत्यता में विश्वास रखते थे। हालांकि वे सन्यासि नहीं थे और एक अमीर परिवार से थे, फिर भी एक साधारण शैली का जीवन व्यापन करते थे।भक्तों को रोग- दोष से मुक्ति दिलाये और बुरी शक्तियों से मुक्त किये।श्री अण्णन स्वामिजी बावन साल की उम्र में बहुत दिन की कठिन तपस्या की, जिसमे उबलते हुए पानी की वाष्प (steam) के पास खडे होकर स्वदंडित करते हुए अपना शुद्धिकरण करते गये जिससे शरीर की त्वचा और मांसपेशियाँ पतली हो गयी। वे जानते थे कि दूसरों से ली हुई पीडाओं को बाहर निकालने के बाद ही स्वर्ग प्राप्ति हो सकती है। इसके पश्चात श्री अण्णन स्वामिजी **22 फरवरी 1989** को दोपहर २ बजे पुदूर मे स्वेच्छा से महाजीवसमाधि मे लीन हो गये।**महासमाधि के बाद आज भी बहुत से चमत्कार हो रहे हैं जैसे:**1. रोगियों को जीवनदान2. आत्महत्या करने के ग्रसित व्यक्तियों को समय रहते मार्गदर्शन 3. गरीबों को अच्छा जीवन4. भक्तों को उच्च देशी विदेशी शिक्षा और अच्छे रोजगार5. भक्तों को अच्छे सहभागी के साथ विवाह करवाना6. बांझों के लिये पुत्र पुत्री प्राप्ति7. लाचार परिवारों में उनकी उपस्थिति को महसूस होना व मार्गदर्शन मिलना8. भक्तों की आर्थिक मदद और वित्तीय स्वावलंबन9. भक्तों को मार्ग मे आनेवाली बाधाओं और पीडाओं को सुअवसर में बदलना

तमिलनाडु के तिरुवारूर जिले में श्री अण्णन स्वामिजी के तीन पूजा स्थल हैं जहाँ पर कई तरह के उत्सव मनाये जाते हैं:१. **पुदूर:** तिरुवारूर बस अड्डा से बीस किलोमीटर दूर, तिरुवारूर – तिरुत्तुरैपूण्डि रोड में पुदूर चौराहा से तीन किलोमीटर दूरी पर स्थित **श्री महाजीवसमाधि स्थान** और **'अतिमरत्ताच्चि' (वट्माता)** के स्थान२. **कोमल:** तिरुवारूर बस अड्डा से बीस किलोमीटर दूर, तिरुवारूर – तिरुत्तुरैपूण्डि रोड में पुदूर चौराहा से एक किलोमीटर दूरी में स्थित **परम पूज्य आण्डाल्पुरम राजगोपाल स्वामिजी महाराज (श्री अण्णन स्वामिजी के गुरुजी) की महासमाधिस्थल** व श्री अण्णन स्वामिजी के मन्दिर3. **विळमल:** तिरुवारूर बस अड्डा से तीन किलोमीटर दूर, तिरुवारूर – मन्नार्गुडि रोड में स्थित श्री अण्णन स्वामिजी का अष्टकोणी मन्दिर जहाँ **राजस्थान मे बनाया गया गुलाबी रंग के संगमरमर से बना हुआ बहुत रमणीय और शानदार श्री अण्णन स्वामिजी** एवं पंचधातु से बने हुये उत्सव श्री अण्णन स्वामिजी

श्री अण्णन स्वामिजी का वादा: "जो मुझमे पूर्णतया विश्वास के साथ मेरी आराधना करता है, उनकी समस्त कठिनाइयाँ और दुख दर्द अपने में समेटकर समस्याओं का समाधान करने के लिये प्रतिबद्ध हूँ जिससे उनको जीवन मे सुख शांति और प्रसन्नता का अनुभव होगा।"

आप कोई भी हो। और आपकी पूर्वपीठिका (background) कुछ भी हो। अब आओ श्री अण्णन स्वामि जी के सान्निध्य में और चखो (taste) उनकी शक्ति को। पाओ आश्चर्यजनक चमत्कारों का आनन्द।

माताजी ही श्री अण्णन स्वामिजी और श्री अण्णन स्वामिजी ही माताजी !!!

जय माताजी की और जय श्री अण्णन स्वामिजी की !!!

श्री अण्णन स्वामिजी के बारे में अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें:

पुदूर: 08124483499 विळमल: 09486319014 www.sriannanswamigal.com

महासिद्धपुरुष श्री अण्णन स्वामिजी के चरणकमलों में समर्पित:-उनके शरणार्थिगण, जयपुर, राजस्थान

विक्रम संवत् फाल्गुन २०७१/ फरवरी २०१५, जयपुर - 09024781018, 08290096068